International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 135-137

नारी चित्रण के विविध आयाम अवधारणा एवं स्वरूप

डॉ० स्नेह

पी–एच.डी. हिन्दी, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमचल प्रदेश, भारत।

1. प्रस्तावना

मानव जीवन का निर्माण विचार एवं भावनाओं की पृष्ठभूमि पर हुआ है। बाह्य प्रगति के लिए विचार आवश्यक हो सकते है, पर मनुष्य को आत्मिक शांति और प्रसन्नता भावनाओं से ही मिलती है। कितना ही धन संपति मिल जाए, साधनों के अंबार लग जाए पर कोई ममता और दुलार देने वाला न हो तो भौतिक जीवन के सारे सुख–साधन प्रसन्नता नहीं दे सकते। ममता, सहकार, सत्कार, दुलार की अपेक्षा को केवल नारी ही पूर्ण कर सकती है।

आज का युग सांस्कृतिक स्पर्धा एवं संघर्ष का युग है। भारतीय नारी सदा ही उच्चतर सांस्कृतिक मूल्यों की वाहक रही है। दया, क्षमा, विनय, अहिंसा श्रद्धा, त्याग जैसे मूल्य उसके स्वभाव के मुख्य अंग है। संक्षेप में कहें तो भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ अंश को नारी ने ही बचाया है। भारतीय परंपरा में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, सत्य है, शिव और सुंदर है, उसका आधार नारी ही है। नारी ही विपत्ति विनाश के लिए दुर्गा–शक्ति है, अज्ञान के अंधकार को मिटाने वाली सरस्वती है और दीनता और निर्धनता को हरने वाली लक्ष्मी है। सीता–सावित्री, अत्री–अनुसूइया, जीजाबाई, रानी लक्ष्मीबाई अनेक रूपों में नारी ने भारतीय संस्कृति की रक्षा की है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि महापुरूष आसमान से नहीं टपकते। उनका निर्माण सुयोग्य नारियों ने ही किया है। संसार के विख्यात समाज–सुधारक शासक और विद्वान व्यक्तियों का निर्माण नारी ने ही किया है। अपने पुत्रों, पतियों को महानता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने वाली जननेत्रियां कस्तूरबा, सरोजिनी, कमला विजयलक्ष्मी, इंदिरा आदि महिलाओं के जीवन पर दृष्टिपात करें तो यही एक तथ्य उभर कर आता है कि महानता नारी की कोख से ही जन्म लेती है।

2. मध्ययुग में नारी की स्थिति

मध्यकाल में स्त्री को घर की चारदीवारी में बंद रखा गया। उसे मात्र अंतःपुर की ही शोभा समझा गया। "नारी को आभूषणों एवं सौंदर्य प्रसादनों की बेड़ियों में जकड़ दिया गया।"[1] विलासी और निरंकुश मुगल शासकों ने बाल विवाह, कन्या–हत्या, पर्दा–प्रथा आदि कुप्रथाओं को जन्म दिया। नारी केवल पुरूष की वासना पूर्ति का साधन बन कर रह गई। यहां तक कि उसे शिक्षा तक के अधिकार से वंचित कर दिया गया।

3. आधुनिक युग में नारी की स्थिति

सन् 1857 में स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारत में नव जागरण का सूत्रपात हुआ। राजा राममोहनराय और स्वामी दयानंद के नेतृत्व में नारी सुधार के कार्य का आरंभ हुआ। आज के युग में नारी को वैदिक काल की नारी के समान ही समाज में अधिकार प्राप्त है। सरकार ने नारी को पुरूष के समान अधिकार देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज प्रत्येक क्षेत्र के द्वार नारी के लिए खुले हैं। अर्थनीति से लेकर राजनीति तक, शिक्षा क्षेत्र से लेकर सैन्य सेवा तक आज भारतीय नारी पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

4. हिन्दी कहानी साहित्य में नारी–चित्रण

हिन्दी कहानी की अपनी एक लम्बी परम्परा है क्योंकि कथा का कहानी कहने का प्रचलन हमारे देश में बहुत पुराना हैं। परन्तु आधुनिक हिन्दी की प्रथम कहानी का श्रेय किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित कहानी 'इन्दुमति' अजयगढ़ के राजकुमार चन्द्रशेखर और देवगढ़ के राजकुमार इन्दुमती के आदर्श प्रेम की कहानी है।

इस युग में कन्या को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इस समय समाज–सुधार आंदोलनों के प्रभाव से कन्या के विवाह की कम से कम आयु सोलह वर्ष मानी जाती थी। द्विवेदी युग में पर्दा प्रथा का प्रचार था जिसके चित्रण बंग महिला की 'दुलाईवाला' में मिलता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जिस नयी चेतना का उद्भव हुआ, उसमें नारी के विकास के स्पष्ट चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। आज स्वतन्त्र व्यक्तित्व पाने की लालसा में नारी ने पुराने उन जीवन मूल्यों को लगभग नकार ही दिया है, जो उसके व्यक्तित्व विकास में बाधा डालते हैं। आज की कहानी के पति–पत्नी पात्र अपने अस्तित्व को एक–दूसरे में विलीन करने की अपेक्षा अपने महत्त्व के प्रति सचेत रहने लगे हैं। नारी की मातृत्त्व सम्बन्धी भूमिका आज भी पारम्परिक है। परन्तु सास–बहु का संघर्ष अब कहानियों में आधुनिक ढंग से मुखरित हुआ है।

5. प्रेमचंदयुगीन साहित्य में नारी चित्रण

कहानी साहित्य में प्रेमचंद का आगमन एक युगांतकारी घटना थी। इन्होंने अपने युग की सामाजिक कुरीतियों का चित्रण बड़े सहज तरीके से किया है। सामाजिक कुरीतियों में प्रेमचंद ने दहेज को समाज के लिए अभिशाप कहा है।

'एक आंच की बसर' में प्रेमचंद ने उन समाज सुधारकों की पोल खोली है जो चोरी–छिपे दहेज लेते हैं। "माल भी चुपके–चुपके उड़ाते थे और यश भी कमाते थे।"[2] शोषित नारी की पोल खोली है पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की कंचन की काया, की देवी 'मलंग' की 'देवी' अनमेल विवाह की शिकार है वह कहती है, "मैं भी किस बंद के पाले पड़ी, जो आदमी होकर आदमी नहीं, जवान होकर नौजवान नजर नहीं।"[3] उत्सर्ग की भावना एंव करूणा प्रसाद की नारी पात्र में मिलते हैं। 'आकाशदीप' की नायिका ममता पिता का दिया स्वर्ण अस्वीकार कर भिक्षा–धर्म पर अडिग रहकर तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगती है' "यह क्या पिता जी"? "तेरे लिए बेटी उपहार है।" "तो क्या आपने मलेन्दु का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी यह अनर्थ हैं लौटा दीजिए, पिताजी हम लोग ब्राह्मण है। इतना सोना लेकर क्या करेगें"[4] इस प्रकार इस युग में वृंदावन लाल वर्मा और जैसे कहानीकारों ने नारी के आदर्श रूप को अपनी कहानियों में उकेरा है।

6. प्रेमचंदोत्तर साहित्य में नारी–चित्रण

प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानी में नये महत्त्वपूर्ण मोड़ आए। कहानी को नये–नये रूप और नये–नये नाम मिलें। नारी का आदर्शवादी मुखौटा उतार कर उसका यथार्थवादी चित्रण कहानीकारों ने अपने लेखन में किया। इस काल में सामाजिक कहानियों के अतिरिक्त कहानियों के पात्रों में मनोविज्ञान के दर्शन होते हैं। अज्ञेय, जैनेन्द्र, अश्क, इलाचन्द्र जोशी, भगवती चंद्र वर्मा आदि इस युग के प्रमुख कहानीकार है।

अज्ञेय की कहानी 'विपथगा' में नारी पूर्णतया विद्रोहिणी बनकर क्रांति का नारा बुलन्द करती है तो इलाचंद्र जोशी 'चरणों की दासी' में स्त्री–पुरूष में समानाधिकार की भावना को जगाते हुए कहते है, "पुरूष किसी भी बात में स्त्री से श्रेष्ठ नहीं है और उसे कोई भी अधिकार नहीं है कि वह स्त्री के ऊपर अपना दबाव कायम रखने की चेष्टा करें।"[5] जैनेन्द्र में नारी पात्र स्वच्छन्दता के साथ–साथ त्याग और ममता से भी जुड़े रहते है। 'सजा' कहानी में मिसरानी अपने बेटे की पढ़ाई–लिखाई के लिए चोरी करती है और सजा पाती है"।[6]

7. नरेन्द्र कोहली के साहित्य में नारी

नरेन्द्र कोहली जी ने अपने कहानी संग्रह में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। कोहली जी ने नारी के अलग–अलग रूपोंका बड़ी की सूक्ष्म दृष्टि से चित्रण किया है। कहीं माँ के रूप में, पत्नी के रूप में, कहीं बहु के रूप में, कहीं गृहिणी के रूप में अपने लेखन में वर्णन किया है। समाज में नारी की कैसी दशा है, उनके जीवन में आने वाली कठिनाइयों और सीमाओं का बहुत ही सूक्ष्मता से चित्रण हुआ है।

7.1 'माँ'

'माँ' शब्द अपने आप में पूर्ण है। माँ ही बच्चे की पहली गुरू है। माँ के बिना यह संसार अधूरा है। बच्चा माँ से ही पहले शिक्षा और संस्कार पाता हैं। इस संसार में प्रत्येक वस्तु का ऋण चुकाया जा सकता है, लेकिन माँ का ऋण व्यक्ति कई जन्म लेकर भी नहीं चुका सकता। माँ इस संसार की सबसे प्यारी चीज है। बिना किसी स्वार्थ के माँ बच्चे को इस दुनिया में लाती है पढ़ाती–लिखाती है, और अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाती है। माँ जितने अच्छे से अपने बच्चे को जानती पहचानती है, उतना ओर कोई नहीं जान सकता। नरेन्द्र कोहली की कहानी 'माँ जानती है' में माँ की भावनाओं का भावनात्मक चित्रण हुआ है। इस कहानी में माँ और बेटा मुख्य पात्र है। माँ के छः बच्चों में अरूमुगम पांचवा है पर उस जैसा कोई नहीं है। माँ कैसे भूल सकती है, "जब उसका परिवार थाथवली की चेरी में रहता था... जैसे कीचड़ में रेंगते कीड़े।"[7] अरूमुगम अपनी माँ और भाइयों को वहां से अपने के केले के बाग में ले आता है और उधार के रूपये लेकर वहां साफ–सुथरा घर बनवाया। माँ जानती थी कि उसका बेटा अरूमुगम अपने कर्त्व्य का कितना पक्का था। पब उसका बेटा चौदह वर्ष का था कितनी धूप थी। जमींदार ने कहा 'तू मर जायेगा रे, काम करते–करते।"[8] अरूमुगम हँसा था, 'पर काम पूरा होने से पहले नही मरूँगा, साहब! चिंता मत करो।'[9] उसका कर्त्तव्य यमराज को भी रोक सकने की क्षमता रखता था। अरूमुगम बड़ा होकर सेना में भर्ती हो जाता है और भारत माता की सेवा करते–करते अपने प्राण न्यौछावर कर देता हैं। माँ अपने बेटे को जानती है कि वह अपनी माँ, परिवार और भारत माँ के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करके इस संसार से विदा हुआ और अपने देश और गांव का नाम रोशन किया। सरकार ने उसकी माँ को वीर चक्र से सम्मानित किया। क्योंकि बेटे की वीरता के सम्मान की पहली हकदार माँ ही होती है।

7.2 पत्नी

लड़की की शादी होने पर उसे अनेक रिश्ते मिलते हैं। इन सभी रिश्तों में सबसे बड़ा रिश्ता पत्नी का होता है। पत्नी धर्म के अनुसार चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, जीवन में सुख या दुख, हर स्थिति में पति का साथ दे। जरूरत पड़ने पर पति के काम में हाथ भी बंटाये।

'शटल' कहानी में भागवंती अपना पत्नी धर्म बखूबी निभाती है। भागवंती पढ़ी लिखी नहीं थी। ईश्वरदास उसका पति है। ईश्वरदास अपनी मर्जी की पुस्तकें बाजार से लाता और खाली समय में उन्हें पढ़ता रहता था। खाने के लिए भागवंती पुकारती रहती। भागवंती कभी–कभी चिढ़कर कहती, 'रोटी तो आराम से खा लो, किताब तो कहीं भागी नहीं जा रही"[10] ईश्वरदास उसे भी किताब पढ़कर सुनाया करता। वह आस–पड़ोस में बहुत कम जाती, उसे अपने पति की पुस्तकें ही अच्छी लगने लगी थी।

भागवंती अपने पति के स्वभाव को अच्छे से जानती थी। उसे पता होता है कि वह कब चाय पीते हैं और खाना भी रसोई में अपनी देख–रेख में खिला देती है। वह जानती है कि 'उसे कौन सी नुक्सान करती है, किस चीज में से कितना नमक चाहिए और कितनी मिर्च।'[11]

जब ईश्वरदास नहाने जाता है तो गुसलखाने में कपड़े टंगे मिलते हैं। पैंतीस वर्षों में उसे अपने कपड़ों का ही पता नहीं।[12] यह काम सिर्फ भागवंती का ही है।

ईश्वरदास भागवंती से मिलने अपने बड़े बेटे के घर जाता है। भागवंती ही उसकी बात को समझ पाती हैं। वही उसे अच्छे से पहचानती हैं। जब वह पूछती है कि वहां सब लोग कैसे है? ईश्वरदास कहता है कि तीसरी बहु उसका ख्याल रखती है और किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। भागवंती समझ जाती है कि वह झूठ बोल रहे हैं वह अपनी बहुओं को अच्छी तरह जानती थी पर मुख से शिकायत करने की आदत दोनों में से किसी को भी नही थी।[13]

'वेश्या का नौकर' कहानी में पत्नी अपने पति का कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। पति अपना ढ़ाबा अच्छा चल पड़ता हैं। काम इतना बढ़ जाता है कि बूटाराम अकेले ढ़ाबे को नहीं संभाल पाता। बूटाराम की पत्नी जिन्दो अब ढ़ाबे में हाथ बंटाती हैं। वह घर भी संभालती है, बच्चों को भी देखती है, और ढ़ाबे में पति का साथ भी देती है। हर कर्त्तव्य का पालन जिन्दो बखूबी कर लेती है। बूटाराम को भी अच्छा लगने लगा कि, "कैसे काम निपटा लेती है जिन्दों।"[14]

7.3 गृहिणी

मकान तो ईंट पत्थरों से बनता है। घर को नाम मकान में रहने वाले सदस्य देते हैं। मकान को घर बनाने में सबसे बड़ा रोल गृहिणी का होता हैं। वह बड़े प्यार से मकान को घर बनाती है। अच्छी गृहीणी के हर फर्ज को निभाती है। परिवार के सब सदस्यों का ख्याल रखती हैं। हर सदस्य की प्रत्येक जरूरत को समय रहते पूरा करती है। अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते–करते असीम संतोष का अनुभव करती है।

'दुहराव' कहानी में नरेन्द्र कोहली जी ने राधा का चित्रण कुछ इस प्रकार से ही किया है। राधा की तीन बेटियां है। जब राधा की शादी होती है तो घर में काम के लिए नौकर होते हैं। राधा धीरे–धीरे घर का काम नौकरों से छुड़ाकर खुद करने लगी। अपने पति पुरी साहब की हर जरूरत को स्वयं पूरी करने लगी। "सवेरे उठकर पति के लिए बैड–टी तैयार करवाती। उनके ब्रश में पेस्ट लगाकर उनके हाथ में पकड़ाती। उनके कपड़े और तौलिया गुसलखानें में टांग देती। उनके जूते साफ करवाती।"[15] इसके बाद

उसकी गोइ में गीता, रीता और नीता आयी। फिर तो उसका अपना स्वतंत्र संसार बन गया। लेकिन काम सबका राधा स्वयं ही करती। घर की प्रत्येक जिम्मेदारी के साथ–साथ बेटी की शादियों तक की जिम्मेवारी राधा ने स्वयं निभायी। गीता की शादी के बाद उसे कर्त्तव्य पूर्ण होने का एक विशिष्ट संतोष मिला। इस संतोष भावना ने उसे दोनों लड़कियों के प्रति उसकी कर्त्तव्य–भावना को और अधिक आत्म विश्वास से भर दिया। उसने दोनों बेटियों का विवाह भी कर दिया। उसका बेटियों के प्रति कर्त्तव्य पूर्ण हो चुका था। राधा ने अपने प्रत्येक फर्ज का पालन किया, निभाया और समय रहते अपने कर्त्तव्य का पालन करके अच्छी गृहीणी होने का कार्य कियाय।

7.4 बहु

जब लड़की की शादी होती है तो घर में बहु के रूप में उसका प्रवेश होता हैं। बहु बनकर उसे कई रिश्ते और नया माहौल मिलता है। प्रत्येक रिश्ते के प्रति अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन अच्छी बहु का कर्त्तव्य है।

'पूर्णता' कहानी में बहु राधा परिवार को एक सूत्र में बांधने के कर्त्तव्य का निर्वाह करती है और प्रत्येक जिम्मेवारी को अच्छे से निभाती है। माँ, बेटा और बहु राधा इस कहानी में तीन पात्र हैं। बेटा अपनी मर्जी से शादी कर लेता है। माँ को यह शादी मंजूर नहीं थी। वह इस शादी से इतनी नाराज़ थी कि बहु के साथ–साथ बेटे को भी छोड़ दिया था। 'वह नाराज़ थी, नाराज़ ही रही–हमारे पास कभी नहीं आयी।"[16]

अचानक एक दिन माँ के आने का तार आया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि बात क्या है। तभी राधा ने सब कुछ मुझे बताया कि मैं बाप बनने वाला हूँ। यह बात राधा ने सबसे पहले अपनी सास को बताई और सास बहु का पत्र मिलते ही हमारे पास आ गई। इतने दिनों से माँ–बेटे के बीच पड़ी दरार को राधा ने पूरा किया। अच्छी बहु होने का कर्त्तव्य निभाया। राधा अपनी हर बात सास से कर लेती थी। जब बेटा ऑपरेशन करके घर आया तो उसने यह बात माँ को न बताकर पत्नी को बताई। राधा चाहती तो इस बात को अपनी सास से छिपा सकती थी। लेकिन ऐसा नहीं किया और यह बात भी सास को बताई।

7.5 सास

सास अपनी बहु को बेटी के रूप में स्वीकार करे तो हमारे समाज की लड़ाईयाँ खत्म हो जाए। बहु के दुःख में साथ दे, सास के कर्त्तव्य को पूरी ईमानदारी से निभायें तो समाज में बहु के झगड़े खत्म हो जाएगें और प्रत्येक घर स्वर्ग बन जायेगा।

'शटल' कहानी में ईश्वरदास भागवंती मुख्य पात्र हैं। उनके बेटे बड़े हो चुके हैं। जिसकी शादी होती है, वह उनसे अलग होकर रहना चाहते हैं। जब किसी लड़के की बीबी बीमार हो जाती है तो माँ के पास आ जाते हैं कि उनके घर चूल्का नहीं जला। तब भागवंती अपनी बहु की देखभाल करने चली जाती है। ईश्वरदास भी भीतर बैठे पिता को रोक नहीं पाता था और स्वयं भागवंती को कहता, "तुम चली क्यों नहीं जाती? आखिर हम किस दिन के लिए हैं? कैसी माँ है तू, बेटों के दुःख में भी हाथ नहीं बंटाना चाहती।[17] सास के रूप में भागवंती अपनी बहु का पूरा ध्यान रखती हैं, घर भी देखती है। घर का काम अपने आप करती है। इतने बुढ़ापे में भी भागवंती सास का फर्ज निभाती है। जब तक बहु ठीक नहीं हो जाती, भागवंती बेटे के घर में ही रहती है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि नारी की भूमिका समाज में अपनी अलग पहचान बनाती है। शुरूआत में नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। लेकिन आज नारी ने अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाई है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल हुई है। नरेन्द्र कोहली की कहानियों में भी माँ, सास, बहु, गृहिणी के रूप में प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने का गौरव प्राप्त हुआ है। प्रत्येक कर्त्तव्य को नारी ने अच्छे से निभाया है। प्रत्येक स्थिति का सामना किया और उसमें कामयाब बनकर जीवन में सफलता पाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नारी उत्थान में समाज का उत्तरादियत्व, भगवती देवी वर्मा
2. मानसरोवर, प्रेमचन्द, पृ० 94
3. 'यह कंचन सी काया'– पांडेय बेचन शर्मा उग्र, पृ० 32
4. 'ममता' (आकाशदीप), जयांकर प्रसाद, पृ० 26
5. चरणों की दासी, इलांचद्र जोशी, पृ० 80
6. सजा भाग–6, जैनेन्द्र, पृ० 15
7. समग्र कहानियां–2, नरेन्द्र कोहली, पृ० 240
8. समग्र कहानियां–2, नरेन्द्र कोहली, पृ० 244
9. समग्र कहानियां–2, नरेन्द्र कोहली, पृ० 244
10. 'शटल', नरेन्द्र कोहली, पृ० 255
11. 'शटल', नरेन्द्र कोहली, पृ० 258
12. 'शटल', नरेन्द्र कोहली, पृ० 259
13. 'शटल', नरेन्द्र कोहली, पृ० 262
14. 'वेश्या का नौकर', नरेन्द्र कोहली, पृ० 267
15. 'दुहराव' नरेन्द्र कोहली, पृ० 225
16. 'पूर्णता', नरेन्द्र कोहली, पृ० 138
17. 'शटल', नरेन्द्र कोहली, पृ० 257